
समाजिक मानसिकता में परिवर्तन से संभव है स्वच्छ भारत

डॉ. सदगुरु पुष्पम्

असि. प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभाग

मुल्तानीमल मोदी कॉलेज, मोदीनगर

स्वच्छता मनुष्य की एक स्वाभाविक आदत है। यह आदत स्वयं यूँ ही नहीं बन जाती है। इसके पीछे क्षणिक व्यवहार के कई कारक सक्रिय रूप से कार्य कर रहे होते हैं। कभी कभी सहज भाव से लगातार पुनरावृत्त होते व्यवहार तो कीर्ण दण्ड विधान के भय से विकसित होते गये व्यवहार। दोनों ही परिस्थितियों में यह समाज के अन्तः पटल पर उकेरा जाता है। तभी कोई व्यवहार आदत रूप ले पाता है, और सर्वस्वीकार्य हो पाता है। यही बात स्वच्छता की आदतों पर भी लागू होती है।

स्वच्छता विकास तथा सामाजिक परिवर्तन तीनों का आपस में काफी नजदीकी सम्बन्ध होता है। वर्तमान समय में किसी विकसित समाज की पहचान का संकेतक समाज में स्वास्थ्य तथा स्वच्छता के स्तर के रूप में देखा जाता है। किसी भी समाज में जहाँ के लोग गन्दगी में रहते हो और स्वास्थ्य के स्तरपर कमजोर, दुर्बल तथा हीन हो, उन्हें सभ्य तथा विकसित नहीं कहा जा सकता। स्वास्थ्य का सम्बंध अनिवार्य रूप से स्वच्छता से जुड़ा होता है। इसलिए जहाँ स्वच्छता है वहाँ स्वास्थ्य है। साथ ही जहाँ स्वास्थ्य है वहीं विकास तथा प्रगति भी है। हमसब जानते हैं कि एक स्वस्थ समाज के सदस्य ही एक मानव संसाधन हो सकते हैं और राष्ट्र के राष्ट्र के विकास में सहयोगी भी।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा मानव विकास सूचकांक में स्वस्थ जीवन का भी एक संकेतक माना गया है। वर्तमान समय में स्वच्छता को लेकर एक राष्ट्र-व्यापी आन्दोलन हमारे तथा आपके सामने छिड़ा हुआ है और यह हर्ष की बात है कि इसका शरवनाद राजनीतिक क्षेत्र से किया गया है। ध्यातव्य है कि स्वास्थ्य तथा स्वच्छता राजनीतिक अवधारणा नहीं है। इसी सन्दर्भ में स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान भी भारतीय जनमानस को राजनीतिक अवधारणा नहीं है। इसी सन्दर्भ में स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान भी भारतीय जनमानस को राजनैतिक चेतना का संचार किया जाता रहा है। राजनीति शास्त्र की भाषा में इसे ना तो वोटो का आधार माना जाता है न ही राजनीतिक वैचारिकी।

स्वच्छ भारत अभियान

स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत भारत सरकार द्वारा देश की स्वच्छता के प्रतीक के रूप में की गयी। वास्तव में स्वच्छ भारत का सपना गाँधी जी के द्वारा देखा गया था। गाँधी जी का मत था कि – “स्वच्छता स्वतन्त्रता से ज्यादा जरूरी है।” परन्तु दुर्भाग्य से भारत आजादी के 67 साल बाद भी गाँधी जी के स्वप्न को साकार करने में अपना योगदान न दे सका। अगर हम आजादी की बात करते हैं तो केवल कुछ प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय है। इसलिए भारत सरकार ने बापू के इस सपने को हकीकत में बदलने के लिये देश के सभी लोगों को इस मिशन से जोड़ने का प्रयास कर रही है।

स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्वच्छता मुहिम है। जिसके तहत भारत को 2019 तक पूर्णतः स्वच्छ बनाना है। इस अभियान की शुरुआत 2 अक्टूबर 2014 को की गयी। भारत के शहरी विकास तथा पेयजल मन्त्रालय के तहत इस अभियान को ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में लागू किया गया है।

इस अभियान का उद्देश्य सम्पूर्ण भारत को स्वच्छ बनाना है। भौतिक, मानसिक, सामाजिक तथा भौतिक कल्याण के लिए भारत के जनमानस में इसका अहसास होना बेहद आवश्यक है। सही अर्थों में यह कहा जा सकता है कि स्वच्छ भारत अभियान भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिये है। अब प्रश्न यह उठता है कि स्वच्छ भारत का निर्माण सामाजिक मूल्य के परिपेक्ष्य में किस प्रकार किया जाये। हम सभी जानते हैं कि स्वच्छता को वर्तमान समय में एक सामाजिक मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है।

स्वच्छता—एक सामाजिक मूल्य

वर्तमान समय में भारत तथा विश्व के अनेक देश सफाई के संकट से जूझ रहे हैं। स्वच्छता के अभाव में कई तरह की समस्याएँ और नई-नई बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। स्वच्छता के लिये भारत सहित विश्व के तमाम देशों के द्वारा व्यपक प्रयास किये जा रहे हैं। इसके बावजूद आज भी वैश्विक आबादी में से करीब 40 प्रतिशत लोग साफ सफाई के संकट से जूझ रहे हैं। इस स्थिति में हमारे समाज की अहम भूमिका है और आगे भी हो सकती है। सफाई के प्रति समाज में जागरूकता से कमी की ही वह वजह है जिसके कारण विश्व की इतनी आबादी इस संकट में जी रही है। सफाई एक सीखा हुआ व्यवहार है और प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में हमेशा सीखा हुआ व्यवहार ही करता है। समाज में यदि स्वच्छता नहीं है तो इसका अर्थ यह हुआ कि यह समाज के द्वारा उसके प्रमुख एजेंडे में नहीं है।

जिस प्रकार समाज में लोग आपस में मिलकर अपने मूल्य तथा प्रतिमान तय करते हैं, उसी प्रकार स्वच्छता और सफाई को भी सामाजिक मूल्य की श्रेणी में लाकर हम स्वच्छ भारत अभियान को सफल बना सकते हैं। प्रसिद्ध समाजशास्त्री एमाइल दुर्खीम ने सामाजिक तथ्यों का वर्णन करते हुये बताया था कि ऐसी चीजें जो समाज में प्रतिमान तथा आदर्श के रूप में स्थापित हैं। उनकी अवहेलना करना व्यक्ति के लिए समय नहीं होता। यह एक ऐसी चीज है जो व्यक्ति को दबाव डालती है और वह उस कार्य को करने को आदी बन जाती है।

वर्तमान समय में कई समाजों में पंचायतों का बहुत प्रभाव है। यदि वे पंचायतें समाज में सफाई की निगरानी सुनिश्चित कर दें तो कई समस्याएँ वैसे ही सुलझ जायेगी। आज दुख की बात है कि इस तरह की गतिविधियों के लिये उन्हें प्रोत्साहित करने की पहल नहीं हो सकी है। आज हम स्वच्छता के प्रति एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से सोचकर आगे बढ़ने की जरूरत है। जिस प्रकार हमारे प्रधानमंत्री जी ने स्वच्छता अभियान के लिये अपने नौ विशेष रत्न बनाये हैं उसका भी स्वर्णिम प्रभाव जनमानस पर दिखायी पड़ रहा है।

जनता अभी अशिक्षित है और उसे इस विषय पर शिक्षित करने के लिये इन तनकीवों को सहारा लेना होगा किन्तु जनता के बीच में बहुत से ऐसे लोग हैं जो सीधे तौर पर जनता को प्रेरित कर सकते हैं। स्वच्छता के निर्धारित लक्ष्य को तभी पाया जा सकता है जब समाज के सभी लोग इस प्रवृत्ति को आत्मसात करें और समाज में इसके प्रति जन चेतना को बदलें।

स्वच्छता के प्रयास

भारत सहित तमाम देशों के द्वारा स्वच्छता के प्रति जागरूकता के लिये लगातार प्रयास करते रहना बेहद जरूरी है। इसी तरह से खुले में शौच की वैश्विक समस्या से निपटने के लिये भी जागरूकता बहुत जरूरी है। इसी क्रम में 19 नवम्बर 2001 को अन्तराष्ट्रीय सिविल सोसायटी ने विश्व टायलेट संगठन की स्थापना की थी। इसकी प्रथम बैठक सिंगापुर में आयोजित की गयी जिसमें यह तय किया गया कि साफ-सफाई के संकट के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिये प्रति वर्ष 19 नवम्बर को विश्व टायलेट दिवस मनाया जाता है, जिसे संयुक्त राष्ट्र महासभा ने भी अपनी मान्यता प्रदान की है।

इस वर्ष भी 19 नवम्बर को विश्व टायलेट दिवस मनाया गया। जिसकी थीम “समानता के साथ सम्मान” घोषित की गयी थी। भारत में सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान 1990 में शुरू किया गया था। इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य ग्रामीण भारत में पूर्ण स्वच्छता लाना था तथा 2012 तक खुले में शौच की समस्या को खत्म करना था। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 1990 के दशक में करीब 90 लाख शौचालय का निर्माण हुआ था। लेकिन इस दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालय का उपयोग करने वालों की दर में केवल एक प्रतिशत की वृद्धि हुई।²

स्वच्छता के अभाव के कारण होने वाली बीमारियों के चपेट में आने के खतरे को महसूस करते हुये भारत सरकार के स्वच्छ भारत अभियान के जरिये देश को खुले में शौच से मुक्त करने का लक्ष्य वर्ष 2019 तक निर्धारित किया है। वर्ष 2019 तक खुले में शौच से मुक्त करने के सम्बन्ध में एक कार्य योजना बनायी गयी है। इसके तहत व्यक्तिगत सामूहिक तथा सामुदायिक शौचालयों का निर्माण करके तथा ग्राम पंचायतों के माध्यम से ठोस तथा तरल कचरा प्रबन्धन के जरिये ग्रामों को स्वच्छ रखने पर जोर दिया गया है।

पंचायत तथा स्वच्छता मन्त्रालय ने भी 2012 से 2022 के दौरान ग्रामीण स्वच्छता तथा सफाई कार्यनीति तैयार की है। इस कार्यनीति का प्रमुख प्रयोजन निर्मल भारत की संकल्पना को साकार करने की रूपरेखा प्रदान करना है। ऐसे परिवेश का निर्माण करना है जो स्वच्छ तथा स्वास्थ्य कर हो।

स्वच्छता—सामाजिक मानसिकता

स्वास्थ्य तथा स्वच्छता पूर्णतः मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक धारणा है। स्वस्थ रहने की चाह प्रत्येक मनुष्य में होती है किन्तु स्वस्थ रहने की आदत सभी में नहीं होती। कुछ लोग स्वच्छता पसन्द करते हैं, और कुछ लोग गन्दगी फैलाने का काम करते हैं। मनोवैज्ञानिक आधार पर यदि इसका सूक्ष्म एक गहन विश्लेषण किया जाये तो यह ज्ञात होता है कि जो लोग गन्दगी फैलाते हैं। वे दो प्रकार के होते हैं। प्रथम प्रकार के लोग अशिक्षित तथा अज्ञानी होते हैं। दूसरे प्रकार के लोग असामान्य प्रवृत्ति के होते हैं। ऐसे लोग किसी न किसी तरह की मानसिक विकृति के शिकार होते हैं। हमें समाज के ऐसे लोगों को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का कार्य करना है।

स्वच्छता ऐसी चीज है जो अनुकरण सी सीखी जाती है। यह एक अति महत्वपूर्ण पहलू है कि व्यक्ति का सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के आधार पर स्वच्छता का स्तर भी अलग-अलग होता है। एक बार पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती गाँधी ने कहा कि “जो वंचित तथा गरीब है उनसे पर्यावरण सुरक्षा की अपील कैसे की जा सकती है। जो अपने लोग अपने जीवन के मूलभूत साधनों की प्राप्ति ही सही तरीके से नहीं कर पाते उनसे वास्तव में गन्दगी के कारकों को रोकने की अपेक्षा नहीं की जा सकती”।

स्वच्छता ऐसी चीज है जिसे करने के लिये आर्थिक मजबूती की आवश्यकता नहीं होती है। कोई भी व्यक्ति जो स्वच्छता के प्रति जागरूक है और जो इसे अपनाना चाहता है वह बिना किसी आर्थिक कठिनाई के स्वच्छ रह सकता है। लेकिन इसके लिये उसको जागरूक होने के साथ-साथ इस तरह की प्रवृत्ति को बढ़ाने के उपाय करने होंगे।

हमारे प्रधानमंत्री जी ने 15 अगस्त को लाल किले से स्वच्छता को जो सन्देश दिया वह एक नयी बात नहीं थी किन्तु इसने देश में एक आन्दोलन का रूप ले लिया है। स्वच्छता का संदेश तथा स्वच्छ रहना एक आदर्श समाज की पहली शर्त है। आज इसके अनुरूप समाज में जनचेतना का निर्माण हो रहा है और यह एक सामाजिक आन्दोलन का रूप ग्रहण कर रही है जो एक विकसित समाज की ओर बढ़ते कदम का परिचायक भी है। अब जरूरी यह है कि समाज में लोगों की मानसिकता में भी स्वच्छता आये क्योंकि इसके बिना हम अपने परिवेश से गन्दगी नहीं हटा सकते।

एक अभिनव पहले के तौर पर स्वच्छ भारत अभियान शुरू तो कर दिया गया किन्तु इसके साथ-साथ इस अभियान की कुछ चुनौतियाँ भी सामने आ रही हैं। समाज के सीपी नागरिकों को यह बात भली-भाँति समझनी होगी कि हम भारत को तभी स्वच्छ बना पायेंगे जब समाज की अन्तः चेतना में युगान्तकारी परिवर्तन हो।

आज समाज में कई लोग हैं जिन्हें साफ सफाई के बारे में कोई गंभीर जानकारी नहीं है। हमारा प्रथम कार्य उन्हें पूर्ण रूप से जागरूक करना है। मानव स्वभाव के अनुरूप साथ ही साथ हम सब यह भी देखते हैं कि जहाँ कहीं भी गन्दगी फैलाने पर दण्डात्मक व्यवस्था है वहाँ डर की वजह से लोग गन्दगी नहीं फैलाते। जहाँ ऐसी व्यवस्था नहीं है वहाँ गन्दगी का अम्बार लग जाता है। गन्दगी पर दण्ड का विधान दिल्ली मेट्रो में देखने को मिलता है। यहाँ थूकने पर 200 रु० का जुर्माना पर लगाया जाता है। अब हम चलते हैं भारतीय रेलवे की तरफ। यहाँ इस तरह की कोई दण्डात्मक व्यवस्था न होने के कारण गन्दगी पूरी तरह से फैली है। इस स्थल पर प्रश्न यह उठता है कि क्या यह हमारी दोहरी मानसिकता का परिचायक है? क्या हम केवल डर से गन्दगी को फैलाते हैं या रोकते हैं? निश्चित तौर पर इस सन्दर्भ में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि इसको कार्यरूप देने के लिये शान्त मन से चिन्तन करने की आवश्यकता है। देश की सम्पूर्ण जनता को इस दिशा में अपनी सोच का नवोन्मेष रूप से बदलने की जरूरत है। तभी सच्चे अर्थों में नवोन्मेष रूप से बदलने की जरूरत है। तभी सच्चे अर्थों नवोन्मेष रूप से बदलने की जरूरत है। तभी सच्चे अर्थों में स्वच्छ भारत की परिकल्पना को साकार किया जा सकता है।

जब हम पूर्णतः स्वच्छ रहते हैं, अपने परिवेश को गन्दा नहीं करते तो हम निरोगी रहते हैं। इससे हमारा स्वास्थ्य सही रहता है और हम कम बीमार पड़ते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट से भी कहा गया था कि यदि भारतीय खाना खाने से पहले साबुन से अपना हाथ धोना शुरू कर दें तो करीब 50 फीसदी बीमारियों को खत्म किया जा सकता है।

वर्ष 2008 में स्टाकहोम में आयोजित वार्षिक जल सप्ताह के दौरान लोगों को जागरूक करने के लिये व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाया गया था। प्रतिवर्ष 15 अक्टूबर के दिन ग्लोबल बाशिंग डे मनाया जाता है। प्रारम्भिक तौर पर इसको स्कूली बच्चों के बीच 70 से अधिक देशों के बीच सफलतापूर्वक चलाया जाता है।

यह महत्वपूर्ण बात है कि आखिर क्यों हमारे जनमानस को सफाई जैसी चीज के लिये प्रोत्साहित करना पड़ रहा है। जबकि यह स्वतः करने वाली चीज है। इसके पीछे व्यक्तिगत सोच तथा प्रेरणा काम करती है। प्रायः अक्सर यह देखा

गया है कि कुछ लोग आलस्य की वजह से सफाई पर ध्यान नहीं दे पाते। कुछ लोग जागरूकता की कमी के कारण ऐसा करते हैं और कुछ लोग झूठी शान के लिये भी ऐसा करते हैं।

वर्तमान समय में न केवल देश वरन वैश्विक स्तर पर भी यह बात मान ली गयी है कि सफाई हमारे स्वयं के लिये, समाज के लिये तथा सम्पूर्ण विश्व के लिये महत्वपूर्ण है। इसके लिए सम्पूर्ण जनमानस को गम्भीर होना ही पड़ेगा। साथ ही जहाँ भी यदि जागरूकता के स्तर से कमी आये तो फौरन सरकार तथा सिविल सोसायटी को इसके लिये सक्रिय भूमिका निभानी चाहिये। हम सच्चे अर्थों में भारत को तभी स्वच्छ एवं विकसित बना सकते हैं जब हम सभी इस बात का प्रण करें कि स्वच्छता की जिम्मेदारी स्वयं उनकी ही है।

सन्दर्भ सूची

- 1 <http://www.ho.int>
- 2 <http://www.gos.in>
- 3 <http://archive.india.gov.in>
- 4 WHO की रिपोर्ट।